International Journal of Multidisciplinary Research and Development 2015; 2(2): 434-436

International Journal of Multidisciplinary Research and Development

IJMRD 2015; 2(2): 434-436
www.allsubjectjournal.com
Impact factor: 3.672
Received: 02-02-2015
Accepted: 17-02-2015
E-ISSN: 2349-4182
P-ISSN: 2349-5979

योगिता राठौर
एनीबिसेंट कॉलेज, इन्दौर

संस्मृति मिश्रा
प्रबंधक व्यवहार विज्ञान विभाग सी. आर. आइ. एस. पी.

Correspondence:
योगिता राठौर
एनीबिसेंट कॉलेज, इन्दौर

ग्रामीण विद्यार्थियों के मध्य सामाजिक बुद्धि एवं समायोजन के आधार पर का तुलनात्मक अध्ययन

योगिता राठौर , संस्मृति मिश्रा

षोध सारांष
विद्यार्थी की उपलब्धि के निष्पादन को विद्यार्थी का समायोजन व उसकी सामाजिक बुद्धि महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते है। चूंकि प्रत्येक बालक की सामाजिक बुद्धि एवं समायोजन लक्षणों में भिन्नता पाई जाती है। इसी कारण उनके व्यवहार में भी अन्तर पाया जाता है। कुछ विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि एवं समायोजन उच्च होता है तो कुछ विद्यार्थियों का निम्न। विद्यार्थियों के निवास की स्थिति का भी विद्यार्थियों के समायोजन एवं सामाजिक बुद्धि पर पर्याप्त प्रभाव पड़ता है। शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में विभिन्न व्यक्तिगत भिन्नताओं वाले विद्यार्थी प्रवेष लेते है। अतः प्रत्येक अध्यापक के लिए यह आवष्यक है कि वह विद्यार्थियों की व्यक्तिगत भिन्नताओं को जाने एवं तदनुसार षिक्षा की व्यवस्था करे। पाठ्यक्रम में शामिल विषय वस्तु भी बालक को अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। विभिन्न विषयों के अध्ययन अध्यापन से व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों का विकास होना पाया गया है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्येष्य ग्रामीण विद्यार्थियों के मध्य सामाजिक बुद्धि एवं समायोजन के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना है। शोध कार्य हेतु इन्दौर जिले के अन्तगर्त आने वाले ग्रामीण क्षेत्र से माध्यमिक स्तर के 100 छात्र एवं 100 छात्राओं का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा किया गया है। समयोजन के मापन के लिए ललिता शर्मा (1988) द्वारा हिन्दी में अनुवादित समायोजन सूची का प्रयोग किया। सामाजिक बुद्वि मापन के लिए बुद्विसागर व वर्मा (2004) द्वारा हिन्दी में अनुवादित "Social Intelligent Scale" का प्रयोग किया। षोध निष्कर्ष में ग्रामीण छात्राओं की तुलना में ग्रामीण छात्रों की सामाजिक बुद्धि सार्थक रूप से अधिक पाई गयी है। ग्रामीण छात्रों एवं ग्रामीण छात्राओं का समायोजन सार्थक रूप से भिन्न नही पाया गया है। ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक बुद्धि एवं समायोजन के मध्य ऋणात्मक सह–संबंध पाया गया है।

प्रस्तावना
शिक्षा का महत्वपूर्ण उद्देश्य बालक को भावी जीवन के लिए तैयार करना है ताकि वयस्क होने के पश्चात् वह स्वयं को जटिल समाज में स्थापित कर सके। इस प्रकार शिक्षा बालक को वयस्क जीवन के लिए प्रशिक्षित कर बालक में सोचने व तर्क करने की क्षमता का विकास करती है, ताकि समय आने पर वह गृह, समाज तथा राष्ट्रीय समस्याओं का समाधान कर सके। आधुनिक समय में शिक्षा का स्वरूप काफी बदला हुआ है। यह संसार निरंतर गतिशील है तथा मनुष्य के स्वभाव में भी गतिशीलता का गुण विद्यमान है, ऐसे में शिक्षा का अस्थिर होना स्वाभाविक है। शिक्षा सदैव गतिशील रहकर बालक को देश, काल और परिस्थिति के अनुसार प्रगति की ओर अग्रसर करती है। शिक्षा एक ऐसी क्रिया अथवा प्रक्रिया है जो मनुष्य के सजग व्यवहार को मानवीय व्यवहार में परिवर्तित करती है, जिससे मनुष्य आवेगपूर्ण ढंग से कार्य करने के बजाय विवेकपूर्ण तरीके से कार्य करता है। इसलिए शिक्षा समाज की एक महत्वपूर्ण उप–प्रणाली है। समाज की उप–प्रणाली के रूप में शिक्षा मनुष्य को शक्तिशाली बनाती है। मनुष्य के पास जितनी अधिक बौद्धिक क्षमता होती है, उसका सामर्थ्य उतना अधिक बढ़ता जाता है। उसके लिए उन्नति के द्वार खुलते जाते है। मनुष्य अपने तकनीकि कौशल का प्रयोग कर दुनिया में अपना अलग स्थान बनाता है। परिवर्तन प्रकृति का नियम है। हर गतिशील वस्तु में परिवर्तन होना स्वाभाविक है। समाज जीवित व्यक्तियों का समूह है, जो अपने विचारों, मूल्यों व गतिविधियों में हमेशा गतिशील रहता है। मनुष्य हजारों वर्ष से पृथ्वी पर निवास कर रहा है क्योंकि पृथ्वी ही एक मात्र ऐसा ग्रह है जो मानव को जीवन जीने की सभी सुविधाएं उपलब्ध कराती है, जैसे हवा, पानी, भोजन, आवास। पृथ्वी की इन सभी व्यवस्थाओं से मानव अनुकूलन व समायोजन स्थापित करता है। मानव ने अपनी बुद्धिमत्ता का प्रयोग कर पृथ्वी पर अपने जीवन को बहुत ही सजह व सरल कर लिया है। दिन–प्रतिदिन मानव तकनीकि एवं वैज्ञानिक कुशलताओं का प्रयोग कर काफी प्रगतिशील व उन्नतिशील हो गया है। वर्तमान वैश्वीकरण, नीजिकरण तथा उदारतावादी युग ने संपूर्ण विश्व के सामाजिक परिदृश्य को परिवर्तित करके रख दिया है कि सम्पूर्ण विश्व अब एक वैश्विक ग्राम नजर आने लगा है, परंतु इसके साथ ही मानव की प्रवृत्ति, उसका आचरण तथा व्यवहार एवं नैतिक मूल्यों का पतन होता जा रहा है।

आज हम एक ऐसे समाज में जी रहे हैं जो सिर्फ पैसे की पूजा करता है तथा धन–संपत्ति ही उसके लिए सबकुछ हो गया है। एक ऐसा समाज निर्मित हो चुका है, जहां सिर्फ उपभोक्तावाद, व्यक्तिवाद, भौतिकवाद का बोलबाला है। उत्पीड़न, भ्रष्टाचार व शोषण सार्थक रूप से बढ़ते जा रहे हैं। दूसरों के प्रति संवेदनशीलता दिन–प्रतिदिन कम होती जा रही है। समाज में दूसरों के प्रति ईर्ष्या एवं दुश्मनी की भावना बढ़ती जा रही है। औपचारिक संबंधों, पृथककरण, अचेतना ने मनुष्य को भीतर से नष्ट कर दिया है। इन्हीं सब बुराईयों के कारण व्यक्ति आज तनाव, कुण्ठा, चिन्ता व असमायेजन अथवा कुसमायोजन के साथ अनेक व्यक्तिगत एवं सामाजिक समस्याओं का सामना कर रहा है। व्यक्ति अपनी बुद्धि का प्रयोग सामाजिकता के लिए कम तथा स्वयं के स्वार्थ के लिए अधिक करने लगा है, जिसके कारण धीरे–धीरे वह समाज में अपने आपको असमायोजित महसूस करता है। व्यक्ति के समायोजन में उसकी सामाजिक बुद्धि महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

किशोरावस्था :–

किशोरावस्था वह अवस्था है जिसमें बालक परिपक्वता की ओर अग्रसर होता है तथा जिसकी समाप्ति पर वह पूर्ण वयस्क व्यक्ति बन जाता है। पूर्ण वयस्कता की स्थिति में उसकी पहचान एक पुरूष अथवा स्त्री के रूप में होती है। साथ ही वह अपने परिवार तथा मित्रों में भी अपनी एक पहचान स्थापित कर लेता है। यही उनके जीवन का एक ऐसा समय होता है, जब विद्यार्थी अपनी शिक्षा व करियर को लेकर महत्वपूर्ण निर्णय लेते हैं, जो कि उनके भावी जीवन को प्रभावित करते हैं। मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि किशोरावस्था बड़े संघर्ष, तनाव, तूफान तथा विरोध की अवस्था है। कई शोध अध्ययन बताते हैं कि किशोरावस्था में यदि विद्यार्थियों को सही निर्देशन व मार्गदर्शन दिया जाए तो संभवतः उन्हें तनाव व संघर्ष का सामना नहीं करना पड़ेगा। प्रस्तुत शोध में ग्रामीण किशोर विद्यार्थियों के समायोजन एवं सामाजिक बुद्धि के विकास के अनेक पहलुओं पर विचार किया गया है जो कि किशोर विद्यार्थियों को सही दिशा प्रदान करने में मदद करेगा। किशोरावस्था को अंग्रेजी में एडोलेसेन्स कहते हैं। एडोलेसेन्स शब्द लेटिन भाषा का एडोलिसियर से बना है जिसका अर्थ है, जिसमें बालक परिपक्वता की ओर अग्रसर होता है तथा जिसकी समाप्ति पर वह पूर्ण वयस्क व्यक्ति बन जाता है। इस अवस्था में होने वाले शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा संवेगात्मक परिवर्तनों को व्यक्तिगत विकास की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। बाल्यावस्था तथा प्रौढ़ावस्था के बीच का संधिकाल होने के कारण इसे जीवन का सर्वाधिक कठिनकाल माना जाता है। सामान्य रूप से किषोरावस्था 12–13 वर्ष की आयु में प्रारंभ होती है तथा 19–20 वर्ष की आयु प्राप्त करने तक बालक पूर्ण वयस्कता अथवा परिपक्वता को प्राप्त कर लेता है। किषोरावस्था को हॉल ने संघर्ष, तनाव, तूफान तथा विरोध की अवस्था कहा है। कोलेसनिक के अनुसार किषोरावस्था में मानसिक जिज्ञासा का विकास होता है अतः वह सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं में रूचि लेने लगता है। वह इन समस्याओं के संबंध में अपने विचारों का निर्माण भी करता है। किषोरावस्था को जीवन के विकास का सर्वाधिक सर्वश्रेष्ठ काल माना जाता है। इस काल में किषोरों में अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तन जैसे शारीरिक, मानसिक, मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक दृष्टि से परिवर्तन दिखाई देने लगता है। भारतीय समाज में विषेष रूप से लड़कियों भारतीय परंपरा के अनुसार आचरण करने पर जोर दिया जाता है। पाष्चात्य देषों की तुलना में भारत में एक वर्ष पहले ही किषोरावस्था प्रारंभ हो जाती है। सामाजिक, आर्थिक स्तर, व्यक्तिगत कारक विद्यालय तथा सामाजिक पर्यावरण पर्याप्त रूप से किषोरावस्था में वृद्धि एवं विकास पर अपना प्रभाव डालते हैं। गृह, विद्यालय तथा समाज की अपेक्षाएँ किषोरावस्था वाले विद्यार्थियों से अधिक हो जाती है, साथ ही समाज उन्हें सामाजिक मान्यताओं के अनुसार आचरण करने के लिए प्रतिबद्ध करते हैं। ऐसी स्थिति में किषोरों की सामाजिक बुद्धि का विकास इस प्रकार होना चाहिए कि वे स्वयं का समायोजन समाज के अनुरूप कर सके।

शोध के उद्देश्य–

1. ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक बुद्धि एवं समायोजन के मध्य सह–संबंध का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएँ

1. ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नही है।
2. ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक बुद्धि में कोई अन्तर नही है।
3. ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक बुद्धि एवं समायोजन के मध्य सार्थक सह–संबंध नहीं है।

शोध विधि–

प्रस्तुत शोध के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

न्यादर्श–

शोध कार्य हेतु इन्दौर जिले के अन्तगर्त आने वाले ग्रामीण क्षेत्र से माध्यमिक स्तर के 100 छात्र एवं 100 छात्राओं का चयन यादृच्छिक न्यादर्श द्वारा किया गया है।

शोध उपकरण–

शोध समस्या के परिप्रेक्ष्य में प्रदत्त संकलन हेतु निम्न प्रमापीकृत उपकरणों का प्रयोग किया गया।

समयोजन के मापन के लिए Indian Adaptation of Bell's Adjustment Inventory मूल रूप से अंग्रेजी में निर्मित एवं ललिता शर्मा (1988) द्वारा हिन्दी में अनुवादित समायोजन सूची का प्रयोग किया।

सामाजिक बुद्धि मापन के लिए चड्डा एवं गणेशन (1986) का मूल रूप से अंग्रेजी में निर्मित एवं बुद्विसागर व वर्मा (2004) द्वारा हिन्दी में अनुवादित "Social Intelligent Scale" का प्रयोग किया।

शोध कार्य में प्रयुक्त सांख्यिकी विधि–

प्रदत्त विश्लेषण के लिए निष्कर्षात्मक सांख्यिकीय प्रविधियों को अपनाते हुए मध्यमान, मध्यांक, मानक विचलन, सहसंबंध गुणांक ज्ञात किया गया तथा टी परीक्षण के माध्यम से सार्थकता का परीक्षण किया गया है।

प्रदत्तों का विष्लेषण एंव व्याख्या–

शोध के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए आकडों की शोध समस्या के संदर्भ में विश्लेषण एवं व्याख्या की गयी है।

तालिका कमांक–1 समायोजन प्राप्तांकों के माध्य, मानक विचलन व टी–मान

Variable	N	M	S.D.	DF	T-value	Sig
ग्रामीण छात्र	100	32.21	8.49	198	1.10	NS*
ग्रामीण छात्राएं	100	31.04	6.39			

*0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक नहीं है।

सारणी 4.5 से विदित है कि टी–मान 1.10 है, जो कि 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक नहीं है, जबकि स्वतंत्रता का अंष 198 है। जो कि, सारणी मान 1. 96 एवं 2.58 से कम है। इसका अर्थ यह है कि ग्रामीण छात्रों के समायोजन माध्यों एवं ग्रामीण छात्राओं के समायोजन माध्यों में सार्थक अंतर नहीं है। इस प्रकार उपरोक्त आधार पर यह शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है कि ''ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं के समायोजन माध्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।'' माध्यों का अवलोकन करने से ज्ञात हुआ कि ग्रामीण छात्रों के माध्य समायोजन के प्राप्तांक 32.21 है जो कि ग्रामीण छात्राओं के माध्य समायोजन प्राप्तांक 31.04 से सार्थक रूप से भिन्न नही है। अतः कहा जा सकता है कि ग्रामीण छात्रों एवं ग्रामीण छात्राओं का समायोजन सार्थक रूप से भिन्न नही है।

तालिका कमांक – 2 सामाजिक बुद्धि प्राप्तांकों के माध्य, मानक विचलन व टी–मान

Variable	N	M	S.D.	DF	t-value	Sig
ग्रामीण छात्र	100	89.09	8.40	198	2.98	S*
ग्रामीण छात्राएं	100	85.64	7.91			

*0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक है।

उपरोक्त सारणी से विदित होता है कि टी का मान 2.98 है जो कि 0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक है, जबकि स्वतंत्रता का अंश 198 है। जो कि, सारणी मान 1.96 एवं 2.58 से अधिक है। इसका अर्थ यह है कि ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक बुद्धि के माध्यों में सार्थक अन्तर है। अतः उपरोक्त आधर पर यह शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है कि ''ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।'' माध्यों का अवलोकन करने से ज्ञात हुआ कि ग्रामीण छात्रों का सामाजिक बुद्धि के प्राप्तांक 89.09 है जो कि ग्रामीण छात्राओं के सामाजिक बुद्धि प्राप्तांकों 85.64 से सार्थक रूप से अधिक है। अतः उपरोक्त के आधार पर कहा जा सकता है कि ग्रामीण छात्राओं की तुलना में ग्रामीण छात्रों की सामाजिक बुद्धि सार्थक रूप से अधिक पाई गयी है।

तालिका कमांक – 3 सामाजिक बुद्धि एवं समायोजन के मध्य सह–संबंध का मान

Variable	M	S.D.	N	R	Sig
सामाजिक बुद्धि	87.36	8.32	100	– .052	S*
समायोजन	31.62	7.52	100		

तालिका क्रमांक 4.13 के अध्ययन से स्पष्ट है कि ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं के समायोजन एवं सामाजिक बुद्धि के मध्य परिगणित सह–संबंध गुणांक का मान – 0.052 है। यह सह–संबंध निम्न और ऋणात्मक है। तालिका में सामाजिक बुद्धि के माध्य अंक 87.36 है जो ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं की उच्च सामाजिक बुद्धि को प्रदर्शित करते हैं, वही समायोजन माध्य अंक 31.62 है, जो कि निम्न है, परन्तु उच्च समायोजन को प्रदर्शित है, क्योंकि उच्च समायोजन माध्य अंक उच्च कुसमायोजन को प्रदर्शित है। उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक बुद्धि एवं समायोजन के मध्य ऋणात्मक सह–संबंध पाया गया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों के सामाजिक बुद्धि के प्राप्तांक उच्च है एवं समायोजन के प्राप्तांक निम्न है। अतः निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि उच्च सामाजिक बुद्धि वाले विद्यार्थियों का समायोजन बेहतर होता है।

शैक्षिक उपयोगिता–

किशोरावस्था विकास की स्वाभाविक प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से उनके व्यक्तित्व का निर्माण हो रहा होता है। किशोरावस्था में बालक–बालिकाएं अनेक समस्याओं से ग्रस्त हो जाते है। आज का युवा वर्ग बड़ी प्रभुता, निर्देशन व उपदेशन को पसन्द नही करते तथा स्वयं की समस्याओं के समाधान हेतु स्वयं के तर्क का उपयोग करना पसन्द करते है। वे चाहते है कि बड़े लोग उनके निर्णय को स्वीकार करे। वे स्वतन्त्रता चाहते है उन्हे आत्मनिर्भरता चाहिए ताकि वे समायोजन एवं सामाजिक बुद्धि के माध्यम से स्वयं के लिए निर्णय ले सके, फिर भी अधिक लंबे अनुभव और अधिक आयु वाले लोगो से उन्हे परामर्श की जरूरत पड़ती है। किशोरावस्था जीवन का सबसे कठिन और नाजुक काल है चुंकि यह तीव्र मानसिक विकास भी अवस्था होती है इसलिए उनमें समायोजन एवं सामाजिक बुद्धि का विकास भी सकारात्मक दिशा में होना चाहिए ताकि व अपने भावी जीवन में सही निर्णय लेना सीख जाए। बालकों के भावी भाग्य और उत्कृष्ट जीवन के निर्माण में उपरोक्त दोनों का महत्वपूर्ण स्थान है इसलिए अध्यापकों और अभिभावकों को उनकी शिक्षा का सुनियोजन और संचालन करना अपना परम पुनीत कर्त्तव्य समझना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्रवाल, आर.एन. ''**प्रयोगात्मक मनोविज्ञान''**, *शांति साहित्य संयोजन गृह,* आगरा 1968
2. अस्थापना, वि. **''मनोविज्ञान विधियां''** *विनोद पुस्तक मंदिर,* आगरा 1985
3. ओसवाल, डी.एस. **''प्रगत षिक्षा मनोविज्ञान''**, *हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निर्देषालय,* प्रथम संस्करण, दिल्ली विष्वविद्यालय, दिल्ली 110007, 2006
4. बिस्ट, आभा. **''प्रगत शैक्षिक मनोविज्ञान''**, *विनोद पुस्तक मंदिर,* आगरा, 1989
5. भटनागर, सुरेष, **''षिक्षा मनोविज्ञान''**, *इन्टरनेषनल पब्लिषिंग हाऊस,* मेरठ
6. सिन्हा, बी.सी.एवं अन्य. **''सामाजिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी''**, *नेषनल पब्लिकेषन हाऊस,* नई दिल्ली 1988
7. मदान, पूनम **''अधिगमकर्त्ता का विकास'',** *अग्रवाल पब्लिकेषंस्,* आगरा, 2013–14
8. सिंह, रामपाल **''अधिगम का मनोविज्ञान'',** *विनोद पुस्तक मंदिर,* आगरा 2007
9. सिंह, आर.एन. **''आधुनिक समाज मनोंविज्ञान'',** *विनोद पुस्तक मंदिर,* आगरा 2005